

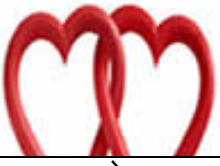


शकियत झकझोर देने वाली कहानी

बड़े गुस्से से मैं घर से चला आया
इतना गुस्सा था की गलती से पापा के जूते पहने गए
मैं आज बस घर छोड़ दूंगा....और तभी लौटूंगा जब बहुत बड़ा आदमी बन जाऊंगा ...
जब मोटर साइकलि नहीं दलिवा सकते थे,तो क्यूँ इंजीनयिर बनाने के सपने देखते है
आज मैं पापा का पर्स भी उठा लाया था....
जसै कसिी को हाथ तक न लगाने देते थे...
मुझे पता है जरुर इस पर्स मैं जरुर पैसो के हसिाब की डायरी होगी....
पता तो चले कतिना माल छुपाया है

.....
माँ से भी ...
इसीलिए हाथ नहीं लगाने देते कसिी को..
जैसे ही मैं कच्चे रास्ते से सड़क पर आया ...
मुझे लगा जूतों में कुछ चुभ रहा है
मैंने जूता निकाल कर देखा
मेरी एडी से थोडा सा खून रसि आया था ...
जूते की कोई कील निकली हुयी थी
दर्द तो हुआ पर गुस्सा बहुत था
और मुझे जाना ही था ... घर छोडकर...
जैसे ही कुछ दूर चला
मुझे पांवों में गलि गलि लगा.....
सड़क पर पानी बखिरा पडा था
पाँव उठा के देखा तो जूते के तला टुटा था
जैसे तेसे लंगडाकर बस स्टॉप पहुंचा

.....
पता चला एक घंटे तक कोई बस नहीं थी
मैंने सोचा
क्योँ न पर्स की तलाशी ली जाये
मैंने पर्स खोला
एक पर्ची दिखाई दी
लखिा था लैपटॉप के लएि 40हजार उधार लएि
पर लैपटॉप तो घर मैं मेरे पास है ?
दूसरा एक मुडा हुआ पन्ना देखा.....
उसमे उनके ऑफिस की कसिी हॉबी डे का लखिा था उन्होँने हॉबी लखिी अच्छे जूते पहनना.....
ओह....अच्छे जुते पहनना ???
पर उनके जुते तो!!!!
माँ पछिले चार महीने से हर पहली को कहती है नए जुते ले लो ...
और वे हर बार कहते
अभी तो 6 महीने जूते और चलेंगे ..
मैं अब समझा कतिने चलेंगे.....
तीसरी पर्ची
पुराना स्कूटर दीजयि एक्सचेंज में नयी मोटर साइकलि ले जाइये ...
पढते ही दमिाग घूम गया.....
पापा का स्कूटर
ओहहहह मैं घर की ओर भागा.....
अब पांवों मैं वो कील न चुभ रही थी
.....
मैं घर पहुंचा



न पापा थे न स्कूटर
ओहहह नही मैं समझ गया कहाँ गए
....
मैं दौड़ाऔर एजेंसी पर
पहुँचा.....
पापा वहीं थे
मैंने उनको गले से लगा लिया ...
और आंसुओ से उनका कन्धा भगौ दियो.....
नहीं...पापा नहीं.....
मुझे नहीं चाहिए मोटर साइकलि.....
बस आप नए जुते ले लो और मुझे अब
बड़ा आदमी बनना है वो भी आपके तरीके से ...